



डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

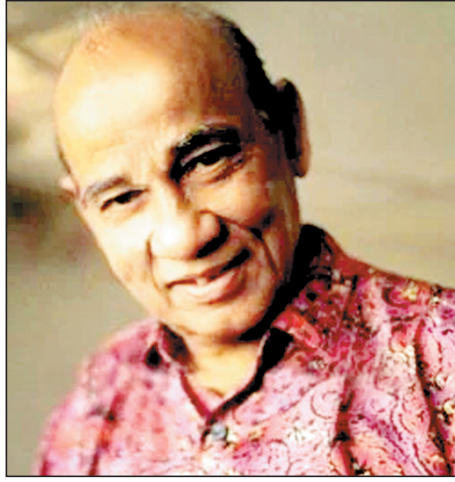
हिंदी फिल्मों के इतिहास में जिन गीतकारों ने अपने शब्दों और भावनाओं से फिल्मी गीतों को अमरत्व प्रदान किया, उनमें गीतकार 'श्यामलाल बाबू राय' का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है। मुमकिन है कि आप इस नाम से वाकिफ न हों, मगर यदि मैं कहूँ कि मैं महान गीतकार इंदीवर की बात कर रहा हूँ तो यकीनन क्रोडि भी सिने प्रेमी ऐसा नहीं होगा जो इस नाम से परिचित न हो और उनका प्रशंसक न हो। इंदीवर उन गीतकारों में थे, जिन्हें सरल शब्दों में गहरी से गहरी बात कहने में बड़ी महारत हासिल थी, उन्होंने कई ऐसे यादगार गीत लिखे, जो सिर्फ फिल्मों का हिस्सा न रहकर हमारे जीवन का अटूट हिस्सा बन गए। उनके गीत इंसानी जज्बातों की सच्ची अभिव्यक्ति हैं।

फिल्मों में आने से पहले 1942 में इंदीवर ने अंग्रेजी सरकार को ललकारते हुए गीत लिखा था, 'कर दे मकान खाली, अरे किरायेदार कर दे मकान खाली' जिसके लिए अंग्रेज हुकूमत ने उन्हें एक साल की जेल की सजा भी दी थी, वो आजादी के आंदोलन के ऐसे दिवाने थे कि अपने दाएं हाथ पर 'आजाद' शब्द गुदवा लिया था।

इंदीवर जिस समय फिल्मों में गीत लिखने के लिये मुंबई पहुँचे, कई महान गीतकार उस समय इंडस्ट्री में मौजूद थे, उनके सामने अपनी जगह बनाना बड़ा कठिन कार्य था और यह संघर्ष केवल आजीविका का न होकर, अपनी रचनात्मक पहचान स्थापित करने का भी था। वर्ष 1951 में पहली बार उन्हें 'बड़े अरमानों से रखा है बलम तेरी कसम' (मल्हार) गीत से प्रसिद्धि मिली और उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और

पायदान-दर-पायदान बुलंदियाँ छूते गए। आगे चलकर साठ, सतर और अस्सी के दशकों में तो वे फिल्म उद्योग के सबसे लोकप्रिय और प्रमुख गीतकारों में शामिल हो गये च इंदीवर के गीतों की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण उनकी सरलता और भावात्मक गहराई थी। यही कारण है कि उनके गीत सुनने वालों के मन में तुरंत उतर जाते थे। उनका मानना था कि गीत तभी प्रभावशाली बनता है, जब वह श्रोता की भाषा में उससे संवाद करे। इसलिए उन्होंने सरल भाषा का प्रयोग किया। उनके गीतों में जो सहजता है उसमें एक गहरी अनुभूति छिपी रहती है। इंदीवर केवल प्रेम-गीतों तक सीमित नहीं थे, उन्होंने दार्शनिक चिंतन, इंसानी रिश्तों, सामाजिक भावनाओं और प्रेरणादायक स्थितियों के लिये 300 से ज्यादा फिल्मों में एक हजार से ज्यादा यादगार गीत लिखे।

इंदीवर ने फिल्म-जगत के अनेक प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया, परंतु उनकी सबसे सफल जोड़ी कल्याणजी-आनंदजी के साथ मानी जाती है। इस जोड़ी ने हिंदी सिनेमा को कई महान गीत दिए। इंदीवर के शब्दों और कल्याणजी-आनंदजी के संगीत का बेजोड़ संगम खूब लोकप्रिय हुआ। इस जोड़ी के अमर गीतों में 'हम ने तुझको प्यार किया', 'जो प्यार तू ने मुझको दिया था' (दुल्हा दुल्हन), 'वक्त करता जो वफा' (दिल ने पुरकारा), 'जिंदगी का सफर है ये कैसा सफर', 'जीवन से भरी तेरी आँखें मजबूर करें', 'नदिया चले चले रे धारा' (सफर), 'चंदन सा बदन चंचल चितवन', 'फूल तुम्हें भेजा है खून में', 'मैं तो भूल चली बाबुल का देश', 'छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए' (सरस्वतीचंद्र), 'मेरे देश की धरती सोना उगले' (उपकार), 'कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे', 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा' (पूरब और पश्चिम), 'तेरे चेहरे में वो जादू है' (धर्मात्मा), 'जिस पथ पे चला उस पथ पे मुझे' (यादगार), 'दरपन को देखा तू ने' (उपासना), 'यू हीं तुम मुझसे बाँध करती हो', 'मेरी प्यारी बहनिया बनेगी दुल्हनिया', 'दिल सच्चा और चेहरा झूठा' (सच्चा झूठा), 'हम छोड़ चले हैं महफिल को' (जो चाहता है), 'समझौता ग़मों से कर लो' (समझौता), 'पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले', 'नफरत करने वालों के सीने में' (जानी मेरा नाम), 'नीले नीले अम्बर पे' (कलाकार), 'हर किसी को नहीं मिलता यहाँ प्यार जिन्दगी में', 'प्यार दो प्यार लो' (जांबाज) और 'आप जैसा कोई मेरी जिन्दगी' (कुर्बानी) जैसे गीत शामिल हैं।



इसके अतिरिक्त उन्होंने रोशन, लक्ष्मीकांत- और पश्चिम), 'तेरे चेहरे में वो जादू है' (धर्मात्मा), 'जिस पथ पे चला उस पथ पे मुझे' (यादगार), 'दरपन को देखा तू ने' (उपासना), 'यू हीं तुम मुझसे बाँध करती हो', 'मेरी प्यारी बहनिया बनेगी दुल्हनिया', 'दिल सच्चा और चेहरा झूठा' (सच्चा झूठा), 'हम छोड़ चले हैं महफिल को' (जो चाहता है), 'समझौता ग़मों से कर लो' (समझौता), 'पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले', 'नफरत करने वालों के सीने में' (जानी मेरा नाम), 'नीले नीले अम्बर पे' (कलाकार), 'हर किसी को नहीं मिलता यहाँ प्यार जिन्दगी में', 'प्यार दो प्यार लो' (जांबाज) और 'आप जैसा कोई मेरी जिन्दगी' (कुर्बानी) जैसे गीत शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त उन्होंने रोशन, लक्ष्मीकांत-

इमोशनल महत्व को बहुत खूबसूरती से दिखाता है, जो ईद और करवा चौथ दोनों का ही एक बड़ा हिस्सा है। जहाँ ईद पर चांद का दिखना जश्न और मिलन का प्रतीक है, वहीं करवा चौथ पर यह प्यार, इंतजार और भरोसे को दिखाता है। 'चांद देख लेना' इन दोनों परंपराओं को

रोमांटिक अंदाज में दिखे सलमान खान



शानाया के रोल के लिए उत्साहित हूँ: मुस्कान बामने

अभिनेत्री मुस्कान बामने का कहना है कि सोनी सब के शो पुष्पा इम्पॉसिबल में जब उन्हें शानाया का रोल ऑफर हुआ तो वह बहुत उत्साहित हुयीं। सोनी सब का चर्चित शो पुष्पा इम्पॉसिबल अपनी दिल छू लेने वाली कहानी और दर्शकों से जुड़ने वाले किरदारों के साथ लगातार दर्शकों का दिल जीत रहा है। कहानी में नया मोड़ तब आता है, जब शानाया (मुस्कान बामने द्वारा निभाया गया किरदार) की एंट्री होती है। शानाया एक आत्मविश्वासी और बेबाक युवती है, जो साउथ मुंबई से आती है। उसका विशेषाधिकारों से भरा नजरिया जब पुष्पा की चाल वाली जिंदगी से टकराता है, तो शो में नए समीकरण और दिलचस्प पल सामने आते हैं। इस टकराव से पुष्पा (करुणा पांडे) की यात्रा और भी गहरी हो जाती है।

गंगा माई की बेटियाँ के शीजान स्टेशन पर हुए इमोशनल

जो कुटुंब अर्वाइव्स के मंच पर उस वक्त सपने, मेहनत और एक माँ की अटूट हिम्मत का संगम देखने को मिला, जब गंगा माई की बेटियाँ में सिद्धू का किरदार निभा रहे शीजान खान को अपने करियर का पहला अर्वाइव मिला। जो पल खुशी का था, वो अचानक बेहद ख़ास और भावुक बन गया, जब जी कुटुंब टीम ने उनके लिए एक सरप्राइज प्लान किया। जैसे ही अर्वाइव देने का समय आया, शीजान यह देखकर हैरान रह गए कि उनकी माँ खुद स्टेशन पर ट्रॉफी देने के लिए आ रही हैं। इस अनदेखे सरप्राइज ने उन्हें पूरी तरह चौंका दिया और कुछ पलों तक वो समझ ही नहीं पाए कि क्या हो रहा है। जैसे ही उन्हें पहचान हुआ कि उनकी जिंदगी का पहला अर्वाइव उनकी माँ के हाथों से मिलने वाला है, वो स्टेशन पर ही भावुक हो गए। वो अपने जज्बातों को संभाल नहीं पाए और उन्होंने बताया कि उस पल उनके दो सबसे बड़े सपने एक साथ पूरे हो गए, पहला अर्वाइव मिलना और वो भी माँ के हाथों से। बड़ी मुश्किल से अपने आंसुओं को थामते हुए शीजान ने कहा, यह मेरा पहला अर्वाइव है। मैं अभी जो महसूस कर रहा हूँ, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है।

कलाकार निभा रहे हैं चैत्र नवरात्रि की परंपरा

चैत्र नवरात्रि, माँ दुर्गा को समर्पित नौ दिनों का पालन पर्व, भक्ति, आभ्युत्थान और नई शुरुआत का प्रतीक है। इस दौरान श्रद्धालु व्रत रखते हैं, पूजा-अर्चना करते हैं और पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। एण्टर्टेनमेंट के कलाकारों ने बताया कि द्यस्त शूटिंग शेड्यूल के बावजूद भी इस ख़ास मौके पर अपनी आस्था और परंपराओं से कैसे जुड़े रहते हैं। इन कलाकारों में शामिल हैं- रोहितेश गौड़ (भाबीजी घर पर है के मनमोहन तिवारी) और सीरत कपूर (घरवाली पेड़वाली में सावी)। घरवाली पेड़वाली में सावी का किरदार निभा रही सीरत कपूर ने कहा, नवरात्रि मेरे लिए बेहद ख़ास है क्योंकि यह भक्ति और आंतरिक शक्ति का प्रतीक है। लंबे शूटिंग घंटों के बावजूद मैंने इस साल कुछ दिन व्रत रखने का फैसला किया है। थोड़ी प्लानिंग के साथ यह आसानी से हो जाता है। मैं सुबह माँ दुर्गा की पूजा से दिन की शुरुआत करती हूँ और फिर सेंट पर जाती हूँ।

इमोशनल महत्व को बहुत खूबसूरती से दिखाता है, जो ईद और करवा चौथ दोनों का ही एक बड़ा हिस्सा है। जहाँ ईद पर चांद का दिखना जश्न और मिलन का प्रतीक है, वहीं करवा चौथ पर यह प्यार, इंतजार और भरोसे को दिखाता है। 'चांद देख लेना' इन दोनों परंपराओं को

इमोशनल महत्व को बहुत खूबसूरती से दिखाता है, जो ईद और करवा चौथ दोनों का ही एक बड़ा हिस्सा है। जहाँ ईद पर चांद का दिखना जश्न और मिलन का प्रतीक है, वहीं करवा चौथ पर यह प्यार, इंतजार और भरोसे को दिखाता है। 'चांद देख लेना' इन दोनों परंपराओं को

गंगा बॉलीवुड के पुराने और सच्चे प्यार की याद दिलाता है। यह गाना एक सैनिक की झूठी और उसके रिश्तों के बीच के इमोशनल सफर को बहुत ही खूबसूरती से दिखाता है। वीडियो में चित्रांगदा सिंह का किरदार एक फौजी की पत्नी की हिम्मत और सब्र को दिखाता है, जो सरहद पर तैनात अपने पति (सलमान खान) का घर लौटने का इंतजार करती हैं। यह गाना उन परिवारों की ताकत को सलाम करता है जो देश की रक्षा करने वालों के पीछे चट्टान बनकर खड़े रहते हैं।

संगीत की दुनिया में कुछ नया करने के लिए, सलमान खान ने इस गाने के जरिए नए टैलेंट को मौका दिया है। 'चांद देख लेना' को युवा गायक निहाल टॉरो, जो अपने आध्यात्मिक भजनों और कीर्तनों के लिए मशहूर हैं, और अंकोना मुखर्जी ने गाया है। सलमान खान ने अपनी परंपरा को बरकरार रखते हुए इन दोनों गायकों को मेनस्ट्रीम सिनेमा में एक बड़ा ब्रेक दिया है। पहले इस फिल्म का नाम 'बैटल ऑफ गलवान' था, लेकिन अब इसे बदलकर 'मातृभूमि: मे वार रेस्ट इन पीस' कर दिया गया है।



छत्रपति शिवाजी महाराज की झलक का इंतजार 'धुरंधर द रिंवेज' संग खास पेशकश

जि यो स्टूडियोज और मुंबई फिल्म कंपनी अपनी महत्वाकांक्षी ऐतिहासिक फिल्म 'राजा शिवाजी' के दमदार फर्स्ट लुक टीजर को खास झलक सिर्फ बड़े पर्दे पर देखने को मिलेगी। इस बहुप्रतीक्षित फर्स्ट लुक को 'धुरंधर द रिंवेज' के साथ जोड़ा गया है। फिल्म 'राजा शिवाजी' की पहली झलक सिर्फ थिएटर में ही दिखाई जाएगी, जिससे दर्शकों को भारत के महान योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन और उनकी विरासत की कहानी की पहली झलक मिलेगी। इस फिल्म का निर्देशन और मुख्य भूमिका रितेश विलासराव देशमुख ने निभाई है। 'राजा शिवाजी' एक

ऐसे बेटे की कहानी है, जिसने एक पवित्र संकल्प लिया और बड़ी ताकतों के खिलाफ खड़े होकर स्वराज्य की नींव रखी। फिल्म में संगीत अजय-अतुल ने दिया है और सिनेमैटोग्राफी संतोष सिवन ने की है। निर्माता इस ऐतिहासिक कहानी को एक भव्य सिनेमाई अनुभव के रूप में पेश करना चाहते हैं, जो भाषाओं की सीमाओं को पार करते हुए भारत की समृद्ध विरासत को दुनिया के सामने लाए। इस फिल्म को जियो स्टूडियोज प्रस्तुत कर रहा है और ज्योति देशपांडे और जिनिलीया देशमुख ने मुंबई फिल्म कंपनी के तहत इसे प्रोड्यूस किया है।

यामी गौतम का छोटा रोल, बड़ा धमाका

धुरंधर: द रिंवेज' ने रिलीज के साथ ही यह साबित कर दिया है कि आज का दर्शक सिर्फ कहानी नहीं, बल्कि एक्सपीरियंस देखने के लिए सिनेमाघरों तक आता है। रणवीर सिंह की दमदार मौजूदगी और आदित्य धर के निर्देशन ने फिल्म को एक अलग ही स्तर पर पहुंचा दिया है। फिल्म का हर सीन, हर

फ्रेम और हर किरदार बड़ी बारीकी से गढ़ा गया है, जो इसे बाकी फिल्मों से अलग बनाता है। फिल्म का सबसे बड़ा सरप्राइज बनकर सामने आई है यामी गौतम, जिनका कैमियो रिलीज से पहले ही चर्चा में था। माना जा रहा था कि वह फिल्म में डॉक्टर की भूमिका निभाएंगी और उनका किरदार किसी बड़े कनेक्शन से जुड़ा होगा। लेकिन फिल्म में उनकी एंट्री एक नर्स के रूप में होती है, जो दर्शकों के लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित है।

फ्रेम और हर किरदार बड़ी बारीकी से गढ़ा गया है, जो इसे बाकी फिल्मों से अलग बनाता है। फिल्म का सबसे बड़ा सरप्राइज बनकर सामने आई है यामी गौतम, जिनका कैमियो रिलीज से पहले ही चर्चा में था। माना जा रहा था कि वह फिल्म में डॉक्टर की भूमिका निभाएंगी और उनका किरदार किसी बड़े कनेक्शन से जुड़ा होगा। लेकिन फिल्म में उनकी एंट्री एक नर्स के रूप में होती है, जो दर्शकों के लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित है।

'सरके चुनर' गाने पर बड़ा बैन विवाद बढ़ा, सभी भाषाओं से हटाया गया

संरके चुनरगाने को लेकर उठे विवाद ने अब एक बड़े मुद्दे का रूप ले लिया है, जहां कला, अभिव्यक्ति और सामाजिक संवेदनशीलता के बीच टकराव साफ तौर पर नजर आ रहा है। कन्नड़ फिल्म 'केडी: द डेविल' का यह गाना रिलीज होते ही चर्चा में आ गया था, लेकिन इसकी लोकप्रियता से ज्यादा इसके बोलों को लेकर विरोध ने सुर्खियां बटोरीं।

सोशल मीडिया पर यूजर्स ने गाने के कुछ हिस्सों पर आपत्ति जताई और इसे आपत्तिजनक बताया। देखते ही देखते यह विरोध इतना बढ़ गया कि फिल्म से जुड़े निर्माताओं और कलाकारों को इस पर प्रतिक्रिया देनी पड़ी। इसी बीच सिंगर मंगली ने सामने आकर माफ़ी मांगते हुए कहा कि उनका इरादा किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था। उन्होंने साफ किया कि यह गलती अनजाने में हुई और इसके लिए वह दिल से क्षमा चाहती हैं।

मंगली ने यह भी बताया कि गाने के विवादित हिस्सों को ठीक कर लिया गया है और जल्द ही इसका नया वर्जन जारी किया जाएगा। इसके साथ ही गाने को हिंदी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु और मलयालम समेत सभी भाषाओं में प्लेटफॉर्म से हटा दिया गया है। यह कदम इस बात को दर्शाता है कि निर्माताओं ने जनता की भावनाओं को गंभीरता से लिया है।

वहीं, इस पूरे विवाद में नोरा फतेही का नाम भी जुड़ गया, क्योंकि गाने के वीडियो में उनकी तस्वीर का इस्तेमाल किया गया था। नोरा ने सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उन्हें फीचर हिंदी गाने के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और उन्होंने इस पर परफॉर्म भी नहीं किया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि उनकी तस्वीर का उपयोग बिना अनुमति के किया गया, जो कि गलत है।

यह मामला सिर्फ एक गाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह इस बात का उदाहरण बन गया है कि आज के दौर में कंटेंट क्रिएटर्स को कितनी सावधानी बरतने की जरूरत है। दर्शकों की भावनाएं और सामाजिक संवेदनशीलता अब पहले से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई हैं, और किसी भी तरह की चूक तुरंत बड़े विवाद में बदल सकती है।

शर्मिला टैगोर की उपलब्धियों को सम्मान

इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ दिल्ली में दिग्गज अभिनेत्री शर्मिला टैगोर को सम्मानित किया जाएगा।

इस फिल्म फेस्टिवल में दर्शकों के लिए जहाँ एक से बढ़कर एक बेहतरीन फिल्में प्रदर्शित की जाएंगी वहीं दिग्गज कलाकारों को भी देखने, सुनने का मौका मिलेगा। 25 से 31 मार्च 2026 तक भारत मंडप में आयोजित होने वाले इस फेस्टिवल दिल्ली में हिंदी सिनेमा में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिग्गज अभिनेत्री शर्मिला टैगोर को सम्मानित किया जाएगा। भारतीय सिनेमा की सबसे कालजयी पहचान मानी जाने वाली शर्मिला टैगोर को यह सम्मान उनके दशकों लंबे करियर और सिनेमा में उनके योगदान के लिए दिया जा रहा है। इस अवसर पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए शर्मिला टैगोर ने कहा,

हिंदी और बंगाली दोनों ही सिनेमा में शानदार काम किया है और ऐसी परफॉर्मंस दे दी हैं जो देश के फिल्मी इतिहास में यादगार हैं। अपनी शालीनता, बेहतरीन रेंज और स्क्रीन पर अपनी जबरदस्त उपस्थिति के लिए पहचानी जाने वाली टैगोर ने भारत के सबसे प्रसिद्ध फिल्मकारों के साथ काम किया है।

इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ दिल्ली को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है और 100 से अधिक देशों से कुल 2,187 प्रतिनिधियों प्राप्त हुई हैं। इनमें 1,372 अंतरराष्ट्रीय और 815 भारतीय फीचर और नॉन-फीचर फिल्में शामिल हैं। भारत मंडपम के साथ-साथ शहर के विभिन्न मल्टीप्लेक्स और सार्वजनिक ओपन-एयर स्थानों पर भी फिल्मों का प्रदर्शन होगा, ताकि उच्च गुणवत्ता वाला सिनेमा एक बड़े और विविध दर्शकों तक पहुंच सके।

